Bihar Board Class 11th Hindi Book Notes गद्य Chapter 12 गाँव के बच्चों की शिक्षा

गाँव के बच्चों की शिक्षा लेखक परिचय – कृष्ण कुमार (1951)

आधुनिक हिन्दी गद्य-साहित्य में कृष्ण कुमार मूलतः प्रखर विचारक के रूप में प्रख्यात हैं। एक विचारक के रूप में अपने लेखन के माध्यम से नारी-मुक्ति व नारी की आजादी आदि कई मानवीय चिन्ताओं के प्रति अपनी सजगता का परिचय देते हुए विचार जगत में उद्वेलन पैदा करने की दिशा में उनके प्रयास, उनकी चेतना और संवेदना को एक नया आयाम प्रदान करते हैं।

कृष्ण कुमार का जन्म सन् 1951 ई० में हुआ था। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद वे अध्यापन-कार्य से जुड़ गये। सम्प्रति दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षा शास्त्र विभाग (सी.आई.ई.) में प्रोफेसर एवं पूर्व संकायाध्यक्ष हैं।

शिक्षा शास्त्री के रूप में सत्तर के दशक में प्रकाशित शैक्षिक प्रश्नों पर केन्द्रित 'राज, समाज और शिक्षा' प्रो. कुमार की एक महत्त्वपूर्ण कृति है। यह कृति आज पूर्व के परिवर्तनों के आलोक में शिक्षा की दशा और दिशा के संदर्भ में अपेक्षित जानकारी देने में सहायक है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत कृष्ण कुमार को लेखक और विचारक के रूप में विशिष्ट पहचान प्राप्त है। भारतीय शिक्षा और उसके अनुपयुक्त रूपों में अवस्थाओं के गहन पर्यालोचन में उनका चिंतन अपने वैशिष्ट्य के साथ प्रकट हुआ है। राष्ट्रीय नवजागरण से लेकर समसामयिक मुद्दों, यथा-भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, दलित एवं नारी विमर्श आदि विभिन्न वैचारिक संदर्भो में समसामयिक भारतीय शिक्षा पर उनकी सोच पूर्णतया उजागर हुई है।

उनका जन्म सन् 1951 में मध्य प्रदेश राज्य के टीकमगढ़ में हुआ था।
ऊँची शिक्षा उन्हें मध्यप्रदेश के सागर विश्वविद्यालय और टोरंटो
विश्वविद्यालय, कनाडा से प्राप्त हुई। सम्प्रति वे एन.सी.ई.आर.टी., नई
दिल्ली के निदेशक है।

हिन्दी साहित्य उनकी कहानियों, यात्रा वृत्तांत और निबंधों से जहाँ समृद्धि हुआ है वहीं उनका शिक्षा दर्शन भी उनके शिक्षा सम्बंधी आलेखों में पूरी तरह से उजागर हुआ है।

उनकी कृतियों में नीली आँखों वाले बगुले, त्रिकालदर्शन, अब्दुल मजीद का छुरा, विचार का.. डर, स्कूल की हिन्दी, राज, समाज और शिक्षा आदि प्रमुख हैं।

भारतीय लोकतंत्र के मूल्यों, प्रतिमानों, रूपों आदि के संदर्भ में उनके शिक्षा-चिंतन विशेष महत्त्व रखते हैं। अपने शिक्षा चिंतन के अन्तर्गत उन्होंने शिक्षा के स्वरूप, प्रक्रिया और प्रविधि में स्थानीय जरूरतों और संसाधनों की अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व दिया है।

उनके अब तक के चिंतन में भारतीय लोकतांत्रिक शिक्षा का एक आधुनिक रूप उभरता दिखलायी पड़ता है।

गाँव के बच्चों की शिक्षा पाठ का सारांश।

प्रस्तुत पाठ “गाँव के बच्चों की शिक्षा” कृष्ण कुमार द्वारा लिखित एक सशक्त हिंदी निबंध है।

कृष्ण कुमार लिखित “गाँव के बच्चों की शिक्षा” एक ही देश और समाज में सामान्य शिक्षा के चल रहे अनेक रूपों को प्रस्तुत करते हुए गाँव के बच्चों की शिक्षा की व्यापक समीक्षा एवं तदनुरूप उसकी विसंगतियों के निराकरण की दिशा में विद्वान लेखक ‘कृष्ण कुमार’ का एक सार्थक प्रयास है। शिक्षा के स्वरूप, प्रक्रिया और प्रविधि में स्थानीय जरूरतों, संसाधनों आदि पर प्रस्तुत निबंध में विशेष जोर दिया गया है। गाँधीजी की बुनियादी शिक्षा की अवधारणा तथा शिक्षा के अपेक्षतया सर्वांगीण रूप के युक्तियुक्त विवेचन की सफल प्रस्तुति इस लेख में की गई है।

विद्वान लेखक अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु पाठकों को फ्रांस द्वारा शासित
पश्चिमी अफ्रीका के एक छोटे-से प्रदेश में ले जाते हैं। वहाँ कमारा-ल्ये
नामक एक लेखक हुए हैं। लेखक ने कमारा-ल्ये की आत्मकथा के कुछ
अंशों के माध्यम से उनके जीवन के संघर्षों का सजीव चित्रण किया है, ग्रामीण परिवेश में प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक का क्रमिक उल्लेख उनकी आत्मकथा में वर्णित है। औपनिवेशिक वातावरण में उनका शिक्षण वस्तुतः प्रशंसनीय था। ग्रामवासी उनकी अप्रत्याशित सफलता से प्रसन्न एवं गौरवान्वित थे, किन्तु उनकी माँ पुत्र के उनसे दूर चले जाने की संभावना से दुःखी थीं।

लेखक ने कमारा ल्ये का दृष्टान्त अपने यहाँ व्याप्त शैक्षणिक वातावरण के संदर्भ में दिया है। लेखक को ऐसा लगता है कि वर्तमान शिक्षा का मानो कोई सामाजिक चरित्र नहीं है। एक प्रतिकूल सामाजिक चरित्र उभर कर सामने आया है। – लेखक की दृष्टि में पंचायती राज का पुनरुदय एक ऐतिहासिक घटना है। उसे इस बात का दु:ख भी है कि पूँजीवाद का प्रसार देश के कोने-कोने में हो रहा है। जमीन, जंगल, पानी, खनिज एवं अन्य मानव संसाधनों पर पूँजीपतियों एवं विदेशी कंपनियों का कब्जा हो गया है।

राजनीति पर हिंसा तथा अपराध हावी है, जिसका शिकार महिलाएँ, मजदूर, कामगार, आदिवासी और छोटे किसान हो रहे हैं। पंचायती राज इस शोषण के निराकरण की दिशा में सार्थक भूमिका निभा सकते हैं।

प्राथमिक शिक्षा को अधिक कारगर बनाकर ही पूर्ण साक्षरता के लक्ष्य की प्राप्ति एवं राष्ट्र का विकास संभव है। भ्रष्ट नौकरशाही, राजनीतिक नेताओं एवं मंत्रियों के काले कारनामों से देश आक्रांत है। आर्थिक उदारीकरण के नाम पर देश में आर्थिक विषमता तथा विपन्नता विकराल रूप धारण कर रही है।

प्राथमिक शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन, कार्यरत शिक्षकों के स्तर में सुधार, उन्हें समुचित अधिकार और सम्मान देकर ही किया जा सकता है। अल्प वेतनभोगी शिक्षकों से सार्थक अध्यापन की आशा करना व्यर्थ है। पाठ्यक्रम में ताकतवर वर्गों की विचारधारा का प्रचार अनुपयुक्त है। ग्रामीण समाज की छवि प्रस्तुत न कर समाज में शासक वर्गों के जीवन की प्रस्तुति निन्दनीय है। प्रस्तुत पाठ के अनुसार इन विसंगतियों का मूल कारण, पिछले कई दशक से चली आ रही यह प्रक्रिया एवं तथाकथित मनोवृत्ति है।।

लेखक ने महिला पंचों के एक सम्मेलन में अप्रैल, 1997 में इस
व्याख्यान द्वारा उक्त विचार प्रकट किए जिन्हें “शिक्षा और ज्ञान”
निबंधमाला में संग्रहीत किया गया है। उन्होंने महिलाओं से शिक्षा, कृषि
और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर चर्चा की। कृषि में कीटनाशकों एवं रासायनिक खाद, पर्यावरण, प्रकृति संरक्षण, समाज में समानता, प्राथमिक शिक्षा तथा महात्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा मुख्य विचार बिन्दु थे।

यह पाठ रचनात्मक समझ जगाने के साथ-साथ एक विचारोत्तेजक बहस की प्रस्तावना भी करता है।

https://www.evidyarthi.in/

गाँव के बच्चों की शिक्षा कठिन शब्दों का अर्थ

होशियार-चतुर, मेधावी। कुव्वत-क्षमता। प्रतिकूल-विपरीत। सरोकार-लगाव, संबंध। बेमानी-व्यर्थ, बेकार। दायरा-क्षेत्र। उत्पीड़ित-शोषित जिसका उत्पीड़न हुआ हो। तबका-वर्ग। पुनरुदय-पुन:उदय। गुंजाइश-संभावना। अभ्युदय-उत्थान। खलबली-बेचैनी। कामगार-काम करनेवाले। अप्रासंगिक-अनुपयुक्त। आलंकारिक रूप से-सजावटी तौर पर। कारगर-सफल, उपयोगी। नौकरशाही-अफसरशाही। तालीम-शिक्षा। मुखातिब-आमने-सामने। शिकंजा-घेरा। विवशता-मजबूती, कुछ न कर पाने की स्थिति। शरीक-शामिल। तादाद-संख्या। कंसलटेंसी फीस-सलाह देने के लिए लिया गया शुल्क। तिरस्कार-अपमान, उपेक्षा। परिधि-घेरा, वृत्त। अंतर्विरोध-भीतरी विषमता। सब्सिडी-छूट। प्रवंचना-ठगी। परनाला-नाला। स्वायत्त-आत्मनिर्भर। समग्र-सम्पूर्ण। दोयम दर्जा-दूसरा स्तर।

गाँव के बच्चों की शिक्षा महत्त्वपूर्ण पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या

1. गाँधीजी के ग्राम स्वराज के सपने का अर्थ है गाँवों को स्वायत्तता देना तथा ग्रामीणों को सम्मानपूर्वक जीने का हौसला देना। इस प्रक्रिया में बुनियादी तालीम की उनकी रूपरेखा आज भी हमें प्रेरणा और काम करने की एक परिधि दे सकती है।
व्याख्या-
प्रस्तुत पंक्तियाँ कृष्ण कुमार द्वारा लिखित गाँव के बच्चों की शिक्षा नामक पाठ से ली गयी है। इन पंक्तियों में लेखक का यह कहना है कि गाँव को स्वायत्तता देना और ग्रामीणों को सम्मानपूर्वक जीने का वातावरण उत्पन्न करके उन्हें हौसला देना गाँधीजी के ग्रामीण स्वराज का सपना साकार हो सकता है। देश में ग्रामीण स्वराज हासिल करने के लिए बुनियादी शिक्षा के साथ-साथ गाँव में लोगों को कुटीर उद्योग का विकास करना चाहिए। बुनियादी शिक्षा ग्रामीण स्वराज के अनुकूल होना चाहिए तभी भारत का समुचित विकास हो सकता है। इस सिलसिले में आजकल पंचायती राज महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

2. देश में आज प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में काफी विदेशी धन आया हुआ
है। इस विदेशी धन को खर्च करने में, हमारे विधायक मंत्री और
अफसर दिन-रात व्यस्त हैं।
व्याख्या-
प्रस्तुत पंक्तियाँ कृष्ण कुमार द्वारा लिखित गाँव के बच्चों के शिक्षा नामक पाठ से ली गयी है। इन पंक्तियों का अध्ययन करने से इस बात का पता चलता है कि आज हमारे देश में प्राथमिक शिक्षा के विकास के लिए बहुत विदेशी धन आया है। इस विदेशी धन की बहुत लूट-खसोट हो रही है। इसमें भ्रष्टाचार बहुत है। इस भ्रष्टाचार में मंत्री, विधायक के साथ-साथ अधिकारी भी शामिल हैं। इस विदेशी धन का बंदरबाँट हो रहा है जिससे प्राथमिक शिक्षा का देश में समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। परिणामस्वरूप हमारे देश में प्राथमिक शिक्षा बहुत सफल नहीं है। हालाँकि सर्व-शिक्षा कार्यक्रम चल रहा है जिसका अनुकूल प्रभाव देश की शिक्षा पर पड़ रहा है। फिर भी प्राथमिक शिक्षा को सफल बनाने के लिए भ्रष्टाचार और धन के लूट-खसोट पर नियंत्रण लगाना चाहिए।